SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिक्षक शिक्षा में अभिनव अभ्यास

गोपाल राम, इतिहास विभाग
श्री रामकृष्ण शारदा आश्रम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
गोपाल राम

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/03/2024
Revised on : -----
Accepted on : 16/05/2024
Overall Similarity : 10% on 08/05/2024

शोध सार

प्राचीन भारतीय संस्कृति 'गुरु' को ब्रह्मा मानती थी। सत्य का प्रतीक और शिक्षा मुख्य रूप से सत्य की खोज के लिए थी। युगों से शासकों के साथ–साथ समाज के वर्गों द्वारा मास्टर्स को बहुत सम्मान दिया जाता था। उन्होंने हमेशा एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था, बुद्ध, महावीर, अरबिंदो और जिद्दू के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। कृष्णमूर्ति वेद से भारतीय इतिहास में इस मार्ग का उदाहरण देते हैं। व्यास व चाणक्य से लेकर स्वामी विवेकानंद तक, भारत ने विश्व को प्रख्यात शिक्षक और गुरु दिए हैं। आधुनिक युग और समय में, शिक्षकों को पूरे देश में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से पेशे के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षक राष्ट्र की नियति को आकार देते हैं और इसलिए शिक्षक की क्षमता और शिक्षक के प्रदर्शन पर अत्याधिक विचार किया जाना चाहिए। यह शिक्षकों की गुणवत्ता और बदले में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों द्वारा मंथन कर रहे शिक्षक की गुणवत्ता में सुधार करना अनिवार्य हो जाता है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम मुख्य रूप से प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा चरणों पर केंद्रित है। स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षकों की रचनात्मक और अभिनव प्रथाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। NEP-2020 के अनुसार स्कूलों की संरचना के आलोक में शिक्षक शिक्षा की पाठ्यक्रम संरचना को बदलने की आवश्यकता है। शैक्षणिक दृष्टिकोण में परिवर्तन को शिक्षक–केंद्रित से शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण–अधिगम में स्थानांतरित करना होगा। इस संबंध में, शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों में रचनावादी दृष्टिकोण की भूमिका पर प्रकाश डालना आवश्यक है। कई शिक्षण और सीखने के तरीके, रणनीतियाँ और दृष्टिकोण अब लगता है निरपेक्ष हो गए हैं। इस तेजी से भागती दुनिया में जीवित रहने के लिए नए जोड़ और बदलावों को अनिवार्य रूप से जोड़ा जाना चाहिए। छात्रों में पाए जाने

वाले मतभेदों को तत्काल संबोधित करने की आवश्यकता है। शिक्षक एक देश के सीखने और सिखाने के पूरे ढांचे का गठन करता है, उनका रवैया योग्यता दृष्टिकोण और कौशल, सभी शिक्षा प्रणाली के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। NEP-2020 द्वारा प्रस्तावित परिवर्तनों को लागू करने के लिए कुशल शिक्षकों और शिक्षक शिक्षकों की आवश्यकता है। यह सकारात्मक और उत्पादक रूप से कसरत करने के लिए बदलती परिस्थितियों में शिक्षा प्रक्रिया को समझने के लिए पहले की नीतियों और कार्यक्रमों की निरंतरता है।

मुख्य शब्द

प्रतीकवाद, रचनावादी, निरपेक्ष, शिक्षा, शिक्षक.

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय संस्कृति 'गुरु' को ब्रह्मा मानती थी, सत्य का प्रतीक और शिक्षा मुख्य रूप से सत्य की खोज के लिए थी। युगों से शासकों के साथ–साथ समाज के वर्गों द्वारा मास्टर्स को बहुत सम्मान दिया जाता था, उन्होंने हमेशा एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था, बुद्ध, महावीर, अरबिंदो और जिद्दू के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। आधुनिक युग और समय में, शिक्षकों को पूरे देश में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से पेशे के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षक राष्ट्र की नियति को आकार देते हैं और इसलिए शिक्षक की क्षमता और शिक्षक के प्रदर्शन पर अत्यधिक विचार किया जाना चाहिए। यह शिक्षकों की गुणवत्ता और बदले में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम मुख्य रूप से प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा चरणों पर केंद्रित है। स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षकों की रचनात्मक और अभिनव प्रथाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

शिक्षा ने मानव इतिहास की शुरुआत से ही विकास, विविधता और इसकी पहुंच और कवरेज का विस्तार करने में योगदान दिया है। प्रत्येक देश अपनी अनूठी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने और बढ़ावा देने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणा (1990) ने विस्तारित शैक्षिक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया जो सार्थक विकास में परिवर्तित होगा। देश की एक मजबूत नींव एक उज्जवल भविष्य की ओर ले जाएगी।

इस प्रकार शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ शिक्षक ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो सभी व्यावसायिकता के साथ सफलतापूर्वक कार्य करता है। इस संदर्भ में, दस्तावेज में शिक्षक शिक्षा को सही स्थान देने में NEP-2020 कोई अपवाद नहीं है। इसकी दृष्टि ने शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार करते हुए शिक्षक शिक्षा को केंद्रीय स्थान दिया ताकि इसके इच्छित परिणामों को प्राप्त किया जा सके। यह सकारात्मक और उत्पादक रूप से काम करने के लिए बदलती परिस्थितियों में शिक्षा प्रक्रिया को समझने के लिए पहले की नीतियों और कार्यक्रमों की निरंतरता है। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए SWAYAM/DIKSHA जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि शिक्षकों के मानकीकृत प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जा सके, व कम समय में बड़ी संख्या में शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा सके। सलाह का एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया जाएगा।

शिक्षा में प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा नीति में शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी के समुचित एकीकरण का प्रावधान है। शिक्षा के सीमित संसाधनों वाला भारत इतना बड़ा देश है कि शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों द्वारा प्रौद्योगिकी का उपयोग करना एक बड़ा सपना लगता है। यदि बिजली की आपूर्ति उचित तरीके से हो, तो हमारे देश में ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा का प्रावधान हमारे शैक्षिक प्रयासों में सफल और वैध हो सकता है।

उद्देश्य

शिक्षक शिक्षा में अभिनव अभ्यास को उजागर करना तथा विभिन्न स्त्रोतों के आधार पर शिक्षा नीतियों द्वारा शिक्षक शिक्षा में किए गए परिवतनों को उजागर करना।

शोध विधि

शोधार्थी ने इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है साथ ही प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध–कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

शिक्षा ने मानव इतिहास की शुरुआत से ही विकास, विविधता और इसकी पहुंच और कवरेज का विस्तार करने में योगदान दिया है। प्रत्येक देश अपनी अनूठी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने और बढ़ावा देने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी सभी के लिए शिक्षा पर विश्व घोषणा (1990) ने विस्तारित शैक्षिक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया जो सार्थक विकास में परिवर्तित होगा। देश की एक मजबूत नींव एक उज्जवल की ओर ले जाएगी।

यह एक सत्य कहावत है कि मनुष्य जीवन भर सीखता और ज्ञान प्राप्त करता रहता है। उनके जीवन का एक काल औपचारिक शिक्षा के लिए समर्पित है। इस अवधि में वह शिक्षकों और स्कूल और कॉलेज में विशिष्ट पाठ्यक्रम के अनुसार लिखी गई पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है। शिक्षकों को छात्रों को ज्ञान प्रदान करने के लिए पेशेवर रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। "शिक्षक शिक्षा में निर्धारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम और विशेष प्रशिक्षण शामिल है जिसके साथ शिक्षकों को विशिष्ट जीवन के अनुभवों के अधीन किया जाता है।" शिक्षक शिक्षा में कई नए तत्व शामिल हैं क्योंकि इस शिक्षा के केंद्र बिंदु केवल छात्र ही नहीं बल्कि समाज और राष्ट्र भी हैं। अतः वर्तमान शैक्षणिक परिस्थितियाँ छात्र केन्द्रित, समाज केन्द्रित और राष्ट्र केन्द्रित पाठ्यक्रम से निपटने के लिए प्रभावशाली और कुशल शिक्षकों की माँग करती हैं। एक सक्षम शिक्षक में व्यापक विषय ज्ञान, प्रभावी शिक्षण, मानसिक और शारीरिक रूप से संतुलित और बौद्धिक, सामाजिक रूप से राष्ट्रीय, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से गतिशील जैसे गुण होते हैं ऐसे शिक्षकों को तैयार करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को केवल सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता बल्कि इसका ध्यान सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकारों को छूने वाले व्यावहारिक पहलुओं तक बढ़ाया जाना चाहिए। ऐसे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षकों को गतिशील बनाएंगे जो बदले में सर्वांगीण समाज और राष्ट्र का विकास करेगा। इस प्रकार शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ शिक्षक ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो सभी व्यावसायिकता के साथ सफलतापूर्वक कार्य करता है। इस संदर्भ में, दस्तावेज में शिक्षक शिक्षा को सही स्थान देने में NEP-2020 कोई अपवाद नहीं है। इसकी दृष्टि ने शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार करते हुए शिक्षक शिक्षा को केंद्रीय स्थान दिया ताकि इसके इच्छित परिणामों को प्राप्त किया जा सके। यह सकारात्मक और उत्पादक रूप से काम करने के लिए बदलती परिस्थितियों में शिक्षा प्रक्रिया को समझने के लिए पहले की नीतियों और कार्यक्रमों की निरंतरता है।

सर्व जैसे गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए शिक्षा अभियान (2005), समग्र शिक्षा अभियान (2018), पढ़े भारत बढ़े भारत (2014), शिक्षा का अधिकार (2009) तैयार और कार्यान्वित किए गए। इन संवैधानिक प्रावधानों और इसके लिए किए गए बाद के उपायों के बावजूद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता को सीखने के लिए एक जरूरी और आवश्यक शर्त के रूप में बहुत चिंता व्यक्त की। वैश्विक शैक्षिक विकास एजेंडा 2030 तक लक्ष्य परिलक्षित होता है। 2015 में भारत द्वारा अपनाए गए सतत् विकास के लिए एजेंडा, समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने और 2030 NEP-2020 तक सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देने का प्रयास करता है। निदान में शिक्षक दक्षताओं को विशेष आवश्यकता होती है। शिक्षक शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करता है। हाल ही में पेश किया गया NEP-2020 एक स्वागत योग्य कदम है क्योंकि यह भारत की शिक्षा प्रणाली में एक पैटर्न बदलाव लाएगा और इसे एक आधुनिक, प्रगतिशील और न्यायसंगत में बदल देगा। NEP-2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई नीतिगत बदलावों को सामने रखता है और शिक्षक शिक्षा परिदृश्य में बड़े बदलावों की सिफारिश करता है। नीति का एक महत्वपूर्ण

फोकस 'शिक्षण की गुणवत्ता' को बदलना है, जहाँ शिक्षकों को भार परिवर्तन के लिए सशक्त बनाया जाएगा। एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शिक्षक शिक्षा प्रणाली को बहु–विषयक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में स्थानांतरित करके और 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. अवधि शुरु करना। यह नीति यह भी सुझाव देती है कि सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उत्कृष्ट शिक्षा विभाग होना चाहिए जो बी.एड., एम.एड. की पेशकश करेगा और पीएच.डी. शिक्षा में डिग्री प्रदान करेगा। NEP-2020 की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक शिक्षा और राष्ट्र के लिए क्षमता निर्माण की रणनीति पर निर्भर करेगी। शिक्षक शिक्षा के परिणामों से इसकी बहुत उम्मीदें हैं जो शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता, आवश्यकता विकास, सेवा की स्थिति और शिक्षकों के सशक्तिकरण पर केंद्रित है। प्रगतिशील राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत की खोई हुई महिमा को 'विश्व गुरु' के रूप में पुनः प्राप्त करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को एक नए युग में ले जाना है। हमारी मौजूदा शिक्षा प्रणाली में आमूल–चूल और महत्वपूर्ण बदलावों की आवश्यकता बढ़ गई थी और एनईपी इस सपने को हकीकत में तब्दील करती है। नीति बहुत व्यापक है और हमारी शिक्षा प्रणाली के सभी पहलुओं को शामिल करती है। यह कार्यक्रम एक आधार की तरह है जो एक लचीला शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में मदद कर सकता है जिससे भारत को शिक्षा नीति के तीन प्रमुख सिद्धांतों– पहुंच, इक्विटी और गुणवत्ता को प्राप्त करने में मदद मिल सके। इसने व्यवस्थित सुधार किए हैं जो 'शिक्षण' को उज्ज्वल और प्रतिभाशाली युवा दिमागों के लिए पसंद के एक आर्कषक पेशे के रूप में उभरने में मदद करेंगे और एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी), शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पेशेवर मानकों (एनपीएसटी) जैसी विभिन्न योजनाओं को लागू किया है। परामर्श के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMM) और एक वर्ष में प्रत्येक शिक्षक के लिए कम से कम 50 घंटे का सतत् व्यावसायिक विकास (CPD) कार्यक्रम का आयोजन करना हैं।

रिपोर्ट किए गए व्यावसायिक विकास के अवसरों की कमी के भीतर एक शिक्षक शिक्षक बनना एक जटिल और चुनौतीपूर्ण प्रयास है। विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ हैं जिनमें से प्रत्येक के लिए व्यावसायिक विकास शिक्षण प्रेरणा, कोचिंग, विविध संगठनों और हितधारकों के बीच सहयोग की सुविधा, मूल्यांकन गेट कीपिंग, पाठ्यक्रम विकास, अनुसंधान और महत्वपूर्ण पूछताछ की आवश्यकता होती है। इतने सारे शिक्षकों द्वारा अनुभव की गई इन भूमिकाओं में शामिल होने की कमी शिक्षकों को अच्छी तरह से प्रलेखित किया गया है। शिक्षक शिक्षकों की पेशेवर सीखने की जरूरतें एक दूसरे से भिन्न हो सकती हैं जो न केवल उनके द्वारा निभाई गई भूमिकाओं पर बल्कि उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, संस्था और देश पर भी निर्भर करती हैं। यह वास्तव में विश्वास है कि इन मुद्दों को शिक्षकों के पूरे दिल से सहयोग सुनिश्चित करने के लिए संबोधित किया जाना चाहिए, जो अकेले इच्छा परिवर्तन ला सकते हैं। इस दृष्टि से, नीति ने उनकी गरिमा, सम्मान और स्वायत्तता सहित शिक्षकों की स्थिति को बढ़ाने के लिए आवश्यक दिशा–निर्देश दिए हैं। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए SWAYAM/DIKSHA जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों के उपयोग को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि शिक्षकों के मानकीकृत प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जा सके, व कम समय में बड़ी संख्या में शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा सके। सलाह का एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया जाएगा।

नई नीति शिक्षक शिक्षा में निम्नलिखित सुधारों का सुझाव देती है

अ) यह शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की वकालत करता है। यह भारतीय परंपरा, मूल्यों और उसके लोकाचार पर आधारित होना चाहिए। इस वैश्वीकरण आधुनिक समाज में उच्च परंपराओं की उपेक्षा की गई है, जो समाज में कई संघर्षों और विनाशों के साथ अराजकता के स्रोत रहे हैं। शिक्षक शिक्षा का व्यावसायीकरण हो गया है और यह बहुत पहले ही अपने चौराहे पर खड़ी हो गई है। इसने अपने गुणों को कम कर दिया है। व्यावसायीकरण की प्रक्रिया और मोबाइल पेशे की शालीनता में मानवता खो गई है। यही कारण है कि 10 साल पहले एनसीटीई ने शिक्षक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) को 'पेशेवर और मानव शिक्षक तैयार करने की ओर' शीर्षक दिया था। जब शिक्षकों में इंसानियत खत्म हो जाती है तो यह समाज की सबसे खराब अवस्था होती है क्योंकि ऐसे शिक्षक छात्रों को अमानवीय बना देते हैं। इसके बाद यह भी देखा गया है कि अपराध, हिंसा और अमानवीय प्रथाएँ न केवल समाज में बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी चरम पर पहुंच गई हैं, जो समाज की जड़ों और उसके परिवर्तन को खतरे में डाल

रही हैं। इस दिशा में नीति स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति के मूल्यों, लोकाचार और परंपराओं का पालन करने के लिए कहती है। शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए यह सही कदम है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक एक समग्र दृष्टिकोण के साथ तैयार होंगे।

ब) अध्यापन को 4–वर्षीय एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में एक साथ पढ़ाया जाना है। ये संस्थान दर्शन, मनोविज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी के शिक्षक के रूप में स्टैंडअलोन संस्थान के रूप में काम नहीं कर सकते हैं इसलिए नीति में कहा गया है कि उन्हें बहुआयामी संस्थानों और विश्वविद्यालयों में स्थापित किया जाना चाहिए। यह एक और महत्वपूर्ण कदम है जिसे अपनाने की सिफारिश के साथ शिक्षक तैयारी में विचार किया गया है। जिन शिक्षक शिक्षा संस्थानों को अलगाव में रखा गया था, उनका विश्वविद्यालयों और बहु–विषयक कॉलेजों में जीवंत जीवन होगा।

स) 4–वर्षीय एकीकृत स्नातक डिग्री स्कूल शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता के रूप में और 2030 तक, पूरे देश में केवल चार वर्षीय पाठ्यक्रमों का पालन किया जाना चाहिए। यह 4 वर्षीय एकीकृत बी.एड. कार्यक्रम को एनसीईआरटी के तहत आरआईई के साथ अनुभव किया गया और भविष्य के शिक्षक को पेशेवर उन्मुखीकरण देने के लिए शिक्षाशास्त्र के साथ सामग्री को एकीकृत करने में सफल साबित हुआ। यह विचार NEP-2020 दस्तावेज द्वारा लिया गया है क्योंकि इसकी मुख्य चिंता शिक्षा में गुणवत्ता है।

इसके अलावा कक्षा में छात्रों के प्रत्येक विचार और गतिविधि को ईमानदारी, प्रतिबद्धता, संतोष, सच्चाई, सहिष्णुता, संरक्षण आदि विकसित करने में सहायक होना चाहिए। यह एक जमीनी हकीकत है कि नियामक निकायों का उद्देश्य पराजित हो गया है। शिक्षक तैयारी में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए मानकों, विश्वसनीयता और अखंडता को बहाल करने के लिए नियामक निकायों में आमूल–चूल परिवर्तन लाने के लिए नीति तैयार की जा रही है। इस प्रकार, सभी को प्रणाली में अंतराल और खामियों की पहचान करने में नीति के खुलेपन की सराहना करनी चाहिए तभी व्यवस्था को मजबूत करने के उपाय शुरू किए जा सकेंगे।

यदि सरकार आवश्यक बुनियादी ढाँचे और मानव घटकों को बनाने के लिए आवश्यक धन आवंटित करने के लिए तैयार है तो काफी हद तक व्यवहार में नीति की दृष्टि के साकार होने की काफी संभावना है। 2030 तक बहु–विषयक डिग्री कॉलेजों में निजी प्रबंधन के कॉलेज चलाए जा रहे हैं। दस्तावेज के अपेक्षित परिणामों को साकार करने के लिए सांस्कृतिक रूप से समृद्ध मूल्यों और लोकाचार के साथ सामग्री और शिक्षाशास्त्र को एकीकृत करके एक शिक्षक तैयार करने के लिए पाठ्यक्रम कैसे निकलेगा क्योंकि बुद्धिजीवियों की कोई कमी नहीं है। हमें उम्मीद है कि नई नीति के आलोक और सिफारिशों में हमारी भारतीय संस्कृति और लोकाचार को बढ़ावा देने वाले उच्च स्तर के मानवीय गुणों के साथ भविष्य के शिक्षक तैयार होंगे।

उच्च शिक्षा संस्थान का अंतर्राष्ट्रीयकरण

एनईपी–2020 में विदेशी विश्वविद्यालयों को भारत में अपने परिसर संचालित करने की अनुमति देने का प्रावधान है। इससे इन विश्वविद्यालयों में प्रतिभा पलायन, उच्च लागत वाली उच्च शिक्षा और शैक्षिक साम्राज्यवाद की समस्या पैदा हो सकती है। वे अपने निवेशकों के दर्शन का प्रचार करने में सक्षम हो सकते हैं और कुछ विशेष प्रकार के परोपकारी स्कूल बन सकते हैं। भारत में विदेशी शिक्षण संस्थानों की स्थापना से विद्यार्थियों के पलायन की समस्या स्वतः ही दूर हो जाएगी और इस प्रावधान से प्रतिभा पलायन को रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

प्राचीन भारतीय संस्कृति 'गुरु' को ब्रह्मा मानती थी, सत्य का प्रतीक और शिक्षा मुख्य रूप से सत्य की खोज के लिए थी। युगों से शासकों के साथ–साथ समाज के वर्गों द्वारा मास्टर्स को बहुत सम्मान दिया जाता था, उन्होंने हमेशा एक बेहतर सामाजिक व्यवस्था, बुद्ध, महावीर, अरबिंदो और जिद्दू के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। शिक्षकों के ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए SWAYAM/DIKSHA जैसे प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों के उपयोग को प्रोत्साहित किया

जाएगा ताकि शिक्षकों के मानकीकृत प्रशिक्षण को प्रोत्साहित किया जा सके, व कम समय में बड़ी संख्या में शिक्षकों को प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया जा सके। सलाह का एक राष्ट्रीय मिशन स्थापित किया जाएगा। शिक्षा में प्रौद्योगिकी, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल शिक्षा नीति में शिक्षा के सभी स्तरों पर प्रौद्योगिकी के समुचित एकीकरण का प्रावधान है। शिक्षा के सीमित संसाधनों वाला भारत इतना बडा देश है कि शिक्षा के हर में छात्रों द्वारा प्रौद्योगिकी का उपयोग करना एक बड़ा सपना लगता है। यदि बिजली की आपूर्ति उचित तरीके चरण से हो, तो हमारे देश में ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा का प्रावधान हमारे शैक्षिक प्रयासों में सफल और वैध हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. नायक, बी. के. (2013) *टेक्स्ट बुक ऑन फाउंडेशन ऑफ एजुकेशन,* किताब महल, कॉलेज स्क्वायर कटक, 5वां संशोधित संस्करण।
2. यूनेस्को, उच्च शिक्षा पर विश्व सम्मेलन 21 को, सेंचुरी, विजन एंड एक्शन, पेरिस 5–9 अक्टूबर, 1998
3. स्मारिका, शिक्षा के लिए वैश्वीकरण, अवसर और चुनौतियां, डॉ. जेडएचटीटीसी दरभंगा में इंडिया एसोसिएशन ऑफ टीचर एजुकेटर्स द्वारा प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 10 और 11 सितंबर, 2006।
4. भाटिया, के. के. और नारंग, सी एन., (1981) फिलॉसॉफिकल एंड सोशियोलॉजिकलफाउंडेशन ऑफ एजुकेशन लुधियाना, प्रकाश ब्रदर्स।
5. मोहंती, जे. एवं नायक, बी. के. (1996) *मॉडर्न ट्रेंड्स एंड इश्यूज इन इंडिया एजुकेशन,* कटक, तक्षयैला।
6. भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालयय शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, नई दिल्ली, 1986।

****